ॐ Date

पुण्य कर्म

मकर संक्रान्ती के पावन पर्व पर

सभी पुण्यआत्माओ को मेरा नमस्कार - - -

मनुष्य के आत्मा की गयी प्रगती ही "आध्यात्मीक प्रगती" कहलाती है। और आत्मा की प्रगती की शुरवात आप के द्वारा किये गये कार्यो से ही प्रारंभ होती है, हम इन कार्यो को "पुण्य कर्म" कहते है। "पुण्यकर्म" से हमारा आशय हमारी "आत्मा" के द्वारा अनेक आत्माओ के लिये कीया गया कार्य। याने प्रथम यह कार्य हमारे शरीर से न हो और न ही शरीर के स्तर पर हो। और न दिखावे के लिये हो और न शरीर का अलंकार बढाने के लिये हो। तभी वह कार्य आपके आत्मा के द्वारा किया गया माना जायेगा। आत्मा के द्वारा किया गया कार्य "आत्मा को शांन्ती" प्रदान करता है, शरीर तो केवल एक माध्यम होता है, उस कार्य का लेकीन उस कार्य मे शरीर का कोई भाव शामील नही होता है, दुसरा यह कार्य अनेक आत्माओ के लिये कीया गया हो, अगर हमारी आत्मा किसी विषेष "समाज" के लिये कार्य करती है, तो उससे एक समाज विषेष के लोग ही लांभान्वीत होते है, हमारी आत्मा कीसी "धर्म" विषेष के लिये कोई धार्मीक कार्य करती है, तो एक विषेष धर्म के लोग ही लाभान्वीत होते है, हमारी आत्मा अगर अपने "देहा" के लिये कार्य करती है, तो एक देहा विषेष के ही लोग उस कार्य से लाभ ले पाते है, याने आपके आत्मा का कार्य किसी विषेष दायरे मे ही सिमीत रह जाता है, वह दायरा, समाज का हो, धर्म का हो, कीसी एक देहा का हो,

आप की आत्मा के द्वारा किया गया कार्य सर्वत्र समान रूप से नही पहुच पाता है, "परमात्मा" तो सर्वत्र ही विद्यमान है, परमात्मा को देश, धर्म, जाती के दायरे मे बांधा नही जा सकता है, तो आत्मा के द्वारा "परमात्मा" के लिये किया गया कार्य भी किसी दायरे मे नही होना चाहिये, इन सब दायरो के बाहर रह कर जब आप की आत्मा कोई पुण्यकर्म करती है, तो ही वह सर्वत्र समान रूप से पहुच सकता है।

जिस प्रकार से एक किसान जब जमीन मे एक बीज बोता है, तब वह इच्छा करता है, की एक बीज से हजारो बीज कल उत्पन्न हो, ठीक उसी प्रकार से जब आत्मा कोई "पुण्यकर्म" करती है, तो वह भी इच्छा करती है, यह मेरा किया गया पुण्य कर्म प्रत्येक आत्मा तक पहुचे तभी वह "परमात्मा" तक पहुच पायेगा, अब प्रश्न है, ऐसा कौनसा "पुण्यकर्म" है, जो प्रत्येक आत्मा तक पहुच सकता है, क्योकी ऐसा पहुचाने से आप की आत्मा संतोष को प्राप्त करती है, वह "पुण्यकर्म" है, "गुरुदेव की सेवा" हिमालय की गुफा मे ही सारा विश्व सिमटा पडा था, "गुरुदेव" साक्षात एक "विश्व" थे उनके बाहर किसी विश्व की मै कल्पना भी नही कर पाता था, गुरुदेव करुणा के सागर थे, वे संसार के प्रत्येक मनुष्य से ही नही समुचे प्राणि मात्र के साथ जुडे थे, उनके माध्यम से समुचे विश्व से मै जुडा हुआ पाता था, वह सारे विश्व के ही माध्यम थे, जाती, धर्म, देश, रंग, भाषा, की सिमा से वे परे थे, मै कभी उन्हे "पानी" भी पिलाता था तो समुचे विश्व के प्राणीमात्र की प्यास बुझा दी यह समाधान मुझे मिलता था, और मेरी स्वयम की भी प्यास बुझ गयी यह अनुभव होता था, वह स्वयम ही एक चलता फिरता विश्व है, ऐसा मेरा भाव था, और मेरे इस अनुभव के आधार पर मै कह सकता हु, की सबसे विशाल और बडा

PTO

पुण्यकर्म है। "गुरुसेवा" क्योंकि गुरुसेवा करके आप विश्व की प्रत्येक आत्मा तक पहुंच पाते है। सद्‌गुरु एक ऐसा माध्यम है। जिसके द्वारा हम सभी विश्व की आत्माओं तक पहुंच पाते है, याने हमारे द्वारा किया गया पुण्यकर्म अधीक से अधीक आत्माओं तक पहुंचता है,

अब हमारे यहाँ तो "सद्‌गुरु का माध्यम" आवश्यकताओं से परे हो गया है, क्योंकि "माध्यम" ने अपना सर्वस्व "गुरुकार्य" को ही समर्पीत कर दीया है, इस लीये अब "सद्‌गुरु" का कोई अलग अस्तीत्व ही नही है, अब "सद्‌गुरु" तक पहुंचना है, और सद्‌गुरु की सेवा करनी है, तो "गुरुकार्य" को ही पकडना होगा। क्योंकि सद्‌गुरु अब "गुरुकार्य" मे विलीन हो गये है, लाखो साधको मे बंट गये है। अब लाखो साधको के लिये किया गया कार्य ही "गुरुकार्य" है।

आप अब "गुरुकार्य" मे सहयोग देकर ही "गुरुसेवा" कर सकते है, और आत्मसंतोष प्राप्त कर सकते है, बस आप का "पुण्यकर्म" आपके शरीर के द्वारा नही आपकी आत्मा के द्वारा किया गया हो, मैंने तो जिवन मे अनुभव लीया है। आप भी अनुभव लेकर देखे, अब "गुरुकार्य" करके वह सर्वश्रेष्ठ "पुण्यकर्म" करे जो जो कर्म आपका प्रत्येक मनुष्यमात्र तक पहुंचे और आप स्वंयम आत्मसंतोष प्राप्त करे,

आप सभी को "मकर संक्रान्ती" के पावन पर्व पर आत्मसंतोष प्राप्त हो यही प्रभु से प्रार्थना है। आप सभी को खूब खूब आशिर्वाद.

आपका
बाबा स्वामी